रिकार्डः- हमारे तीर्थ न्यारे हैं..* ओमशान्ति प्रातःक्लास 31-1-68

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। गीता का अर्थ तो गीत बनाने वाले जानते नहीं हैं। जैसे गीता बनाने वाले भी इसके अर्थ को थोड़े ही जानते हैं। वेद-शास्त्र आदि जो कुछ भी भक्ति मार्ग में बनाई है उनकी रिजल्ट क्या निकलनी है समझते थोड़े ही हैं। वह तो समझते हैं बहुत भक्ति करने से भगवान मिलेगा। और बाप कहते हैं भक्ति से और ही दुर्गति होती है। भगवान ही आकर सद्गति करते हैं। वह लोग सन्यासी ड्रेस पहनते हैं, बड़े2 तिलक देते हैं। तुमको तो झूठा तिलक नहीं देना है। तुमको आपे ही अपने पुरुषार्थ से अपने को राजतिलक देना है। यह तो बाप समझाते हैं कैसे तुम महाराजा राजा बनेंगे। पुरुषार्थ खुब करना है। हर एक अपने को तिलक देते हैं। अभी मनुष्य दुनिया में जो कुछ भी कान्फ्रेन्स आदि करते हैं समझते कुछ भी नहीं। जैसे पूछा है रिलीजन और सायंस में क्या कनेक्शन है। कहते हैं विश्व में शान्ति कैसे हो। प्रश्न तो पूछते हैं परन्तु खुद तो जानते ही नहीं। तो उनको क्या कहेंगे। पीस कैसे हो सकती है खुद जानते ही नहीं। बस जिसने कोई राय दी तो उनको पाई-पैसे की प्राईज़ दे देते हैं। उन्हों को यह तो पता ही नहीं है कि जो पीस स्थापन करने में मददगार बनते हैं उन्हों को विश्व की बादशाही मिलती है। यह तुम जानते हो हम श्रीमत पर चलने से विश्व के मालिक बनते हैं। वह भी सारा श्रीमत पर कदम कदम चलने से। मदद तब मिलेगी जब कदम2 श्रीमत पर चलेंगे। इसमें ही मेहनत है। कोई तो बहुत धीरे2 चलते हैं। फट से नहीं चल पड़ते। अपने मत पर भी चल पड़ते हैं। अभी कान्फ्रेन्स आदि करते रहते हैं, तुम भल कितना भी समझावेंगे परन्तु वह लोग अभी समझेंगे नहीं। सायंस घमण्डी हैं माया। वह हैं माया। यह है प्रभु। प्रभु की तो जरूर विजय होगी इस संगम पर। वह कोई यह थोड़े ही समझेंगे कि उन्हों को यह ईश्वर समझाते हैं। भल तुम लिखो भी श्रीमत से हम यह समझाते हैं। परन्तु समझेंगे नहीं। श्रीमत किसको कहा जाता है। आजकल तो श्री बहुतों को कहते रहते हैं। कुत्ते-बिल्ले सब उन्हों को भी श्री कहते हैं। वह लोग तो श्रीमत मनुष्य को समझ लेंगे। ज्ञान तो है नहीं। मनुष्य अपने को ही श्री कहने लग पड़े हैं। आगे मिस्टर लिखते थे अभी श्री लिखते हैं। इसलिए तुम लिखो शिवभगवानुवाचः अथवा परमपिता शिव। तो कुछ समझे। सिर्फ श्रीमत लिखने से समझ सके। श्रीमत वास्तव में होती ही है भगवान की। मगर बुद्धि मनुष्य समझते ही नहीं। यह भक्ति भी ड्रामा में उनका पार्ट है। कान्फ्रेन्स आदि करते रहते हैं। परन्तु खिरतील कुछ भी नहीं। कहते हैं विश्व में शान्ति हो। यहां हो कैसे सकता। आत्मायें जब ऊपर में है तो पीस है। तुमको समझाना है एक तो पीसफुल है निराकारी दुनिया, दूसरा वर्ल्ड में पीस हैसत युग में ही रहती है। जो पीस अभी बाप ही स्थापन कर रहे हैं। बाकी अनेक धर्म खलास हो जावेंगे। सतयुग में तो पीस ही पीस है। वह है पीसफुल वर्ल्ड। यह तुम समझा सकते हो। परन्तु तुमको तो अक्ल करते नहीं है। अभी देखो इसलिए उड़ाते रहेंगे। यह तो तुम बच्चे ही जानते हो हम विश्व में पीस स्थापन कर रहे हैं। तुम घर के बच्चे हो तो बाबा बाबा कहते रहते हो। बाबा कहने से तुम्हारी बुद्धि में कोई लौकिक बाप नहीं आवेंगे। क्योंकि तुम हो गये हंस। मोती चुगने वाले, वह बगुले हैं पत्थर चुगने वाले। ज्ञान रत्न हैं। ब्रह्मचारी के लिए भी कुन्डी पहनते हैं ना। तुम्हारे ऊपर तो अभी बृहस्पत की दशा बैठी है। तुम जानते हो हम विश्व के मालिक बनेंगे। जो बहुत फर्स्ट क्लास चलते हैं उन पर कहेंगे बृहस्पत की दशा। फिर अचानक ही माया का तूफान आ जाता है तो कहते हैं बाबा खुशी का नशा कुछ कम दिखाई पड़ता है। कमाई में भी ऐसे होता है। दशायें बदलती रहती है। कोई तो लिखते बाबा काला मुंह कर दिया। क्षमा करो। बाप कहेंगे राहू की दशा बैठी। निकार है ही राहू की दशा। इस समय सारे विश्व पर राहू की दशा है। पहले2 तुम सुख में आते होतो तुम पर बृहस्पत की दशा रहती है। अभी बृहस्पति की दशा तो सभी पर है। फिर उन में भी नम्बरवार है। वृक्षपति भगवान बैठ पढ़ाते हैं।

बच्चे अपनी अवस्था से खुद भी समझ सकते हैं हमारे पर अभी बृहस्पत की दशा है, बाबा के दिल पर चढ़े हुये हैं। जानते हैं यह बाबा तख्त नशीन होगा। हम बाप के दिल पर चढ़े तो जरूर तख्त पर भी बैठेंगे। कोई समझते हैं भल हम बच्चे तो हैं परन्तु तख्त पर नहीं बैठेंगे। यह ही नहीं है। बाबा समझ सकते हैं कि तो कुछ भी काम नहीं करते। इनको खिलाओ, पिलाओ, पिछाड़ी को जाकर नौकर बनेंगे। बहुत मेहनत करनी है यहां। झट पूछूंगा कितने को आप समान बनाया है। ब्राह्मणी बहुतों को मेहनत कर ले आती है। समझते हैं बाप रिफ्रेश करेंगे। यह तो सुप्रीम टीचर भी हैं ना। पहले2 हैं सुप्रीम नालेजफुल गाड। सेकन्ड नम्बर में फिरश्ता हैं। यह बड़ी वन्डर फुल बातें हैं। मनुष्य तो एक ही बात नहीं जानते ईश्वर कैसे आकर नई दुनिया की स्थापना करते हैं। राजयोग सिख लाते हैं। जो कुछ भी प्रश्न पूछते हैं खुद तो जानते हो नहीं। तुम समझाओगे तो बुद्धि में कैसे आवेगा। कितनी मेहनत है। शिवबाबा इस समय जैसे करनीपुर हो के आये हैं। विचारों पास हैं ही क्या। भक्तिमार्ग में ईश्वरअर्थ दान-पुण्य आद करते हैं ना। अभी तो ईश्वर सम्मुख है। आगे यह थोड़े ही समझते थे दान पुण्य आद करने से2। जन्म लिये मिलेगा। यह अभी तुम समझते हो हम जो कुछ करेंगे हमको 21 जन्म लिये रिटर्न में मिलेगा। यह वेहद का बाप सम्मुख है। अभी तुम समझते हो भक्तिमार्ग में ईश्वर अर्थ करते थे उसका कैसे हिसाब-किताब चलता था। ईश्वर को दिया फिर रिटर्न मिलता है। तो उनको देना थोड़े ही कहना चाहिए। ब ईश्वर कंगाल थोड़े ही है। वह तो सौना कर रिटर्न करते हैं। यह भी पहले से ही ड्रामा में नूंध है। यह बना बनाया वेहद का ड्रामा है। इसको कोई भी नहीं समझे जानते। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रिपीट एक्युरेट। जो भी तुम देखते हो सब का ड्रामा में पार्ट है। यह भी धीरे2 समझना है। फट से नहीं। समझाने वालों में भी नम्बरवार है। हर एक की अपनी 2 अवस्था है। कोई थर्ड क्लास ब्रह्मा कुमारी फिसर अच्छे पढ़े-लिखे को मिल जाती है प्रश्न का रेस्पान्स पूरा नहीं दे सकती तो एक के कारण सभी ब्रह्माकुमारियों की इज्जत चली जाती है। कहेंगे यह ब्रह्माकुमारियां क्या समझाती हैं, ऐसे ही चले जावेंगे। दिल हट जावेगी। ऐसे बहुत होते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। खुद तो अपनको बहुत अच्छा समझते हैं। परन्तु यह तो बाप ही और अन्यान्य बच्चे ही जान सकते हैं। बाबा का ख़याल था शिवजयन्ती पर बच्चों को समझाते रहें। कैसे तुम परिक्रमा निकालो शिव काका महिमा में फिर तुम से आर्यसमाजी झिट-पिट न करेंगे। वह भी शिवजयन्ति तो मनाते हैं। शिवबाबा कब आया क्या आकर किया। यह लोग देवताओं के मूर्त को नहीं मानते हैं। तुम तो स्थापना कर रहे हो। देवता धर्म की। अभी तो अनेक धर्म हैं ना। कितने ढेर मत-मतान्तर, डार, डार, टारियां, टारियों के भी डारियां हैं। अभी झाड़ वृद्धि को पाये पूरा हुआ है। सभी अपने नशे में हैं। अभी बाप द्वारा तुम सब कुछ जान गये हो। सब के आक्युपेशन को तुम जानते हो। यह भी बाप ने समझाया है शिव अलग है, शंकर अलग है, शंकर का तो कोई पार्ट ही नहीं। ऐसे नहीं कि बाप उनको कहेंगे कि सब को मारो। कहते हैं शंकर की आंख खुलने से प्रलय हो जाती है। ऐसी कोई बात नहीं। झूठ माना झूठ... गीता में भी झूठ। भगवानुवाच ने रांग कर दिया है तो बाकी सभी रांग हो तब जाता है। अभी तुमको रात दिन इसी पर ही विचार सागर मथन करना है। इस एक बात में ही तुम्हारा विजय होनी है। वेहद के बाप की बायोग्राफी और बच्चे की बायोग्राफी में तो रात दिन का फर्क। बाप के बच्चे का नाम डाल दिया। बाप कहते हैं तुम तो महामुर्ख हो। तुमको यह भी समझ नहीं है कि गीता का भगवान कौन है। तुम कृष्ण के लिए समझते हो तो कहते हैं वह तो अमर है। सर्वव्यापी है। जिधर देखो कृष्ण ही कृष्ण। तुम कहेंगे यह तो उल्टू पाठी है। यह भी ड्रामा में हर एक को पार्ट मिला है। आत्मा कब विनाश को नहीं पाती। तुम इस सारे आ को जान चुके हो। आगे सत्यनारायण की कथा सुनते थे समझते थोड़े ही थे। अच्छा नारायण बनूंगा फिर प्रजा करेंगे बनेंगे। बिलकुल ही बेसमझ की कथायें हैं। कितने दन्त कथायें हैं। अभी तुम थोड़ी सुनेंगे। अभी तुम जानते हो बाप जो सत्य है वह हमको न

से नारायण बनाते है। गीता में भी भगवान राजयोग सिखलाते हैं। मनुष्य कैसे सिखलावेंगे। जो पास्ट हो जाता है उसका फिर भक्ति मार्ग में वर्णन होता है। देवताएं से बड़ा तो कोई हो न सके। देवी-देवता धर्म की स्थापना शिवबाबा ने होकी है। अभी वह धर्म है नहीं। यह हैं ही इरिलीजियस। अन राईटयस। अ ईनलाफुल। पूछते हैं विश्व में शान्ति कैसे हो। भला कब हुई थी? प्रश्न पूछने वाला खुद नहीं जानते तो अनारी ठहरे ना। बाप कहते मैं परमधाम से आये तुम बच्चों को पढ़ाता हूं। मैं हर 5000 वर्ष बाद आता हूं। यह भी ड्रामा है ना। अभी और सभी धर्म हैं बाकी जो धर्म न है उनकी स्थापना हो रही है। चित्रों पर तुम अच्छी रीत समझाये सकते हो। यह जब धर्म था तो दूसरा कोई धर्म न था। तुम जानते हो तो समझाते हो ना। परन्तु यह समझते नहीं हैं कि इन्हों को समझने वाला जरूर कोई है। यह ड्रामा का चक्र फिरता रहता है। जैसे नार में कगनी भरती है, खाली होती है ना। तुम सब हो किंगनी। आधा कल्प भरते हो फिर खाली होने लग पड़ते हो। फिर बाप भरने आते हैं? अभी तुम समझते हो हम आत्माएं पढ़ रही हैं। परमात्मा बाप पढ़ाते है। शरीर बिगर तो आत्मा कुछ कर न सके। आत्मा निकल जाये दूसरा शरीर लेती है। तो बाकी शरीर मुर्दा हो जाता। ब्राह्मण खिलाते हैं तो उनमें भी आत्मा को बुलपते हैं। समझो किसकी स्त्री मर गई तो आत्मा को निमंत्रण देते हैं। उनके आगे सब कुछ रखते हैं। आगे ब्राह्मण में आत्मा आती थी। यह सब ड्रामा में नूंध है। शरीर छोड़ कर नहीं आते हैं। स्त्री की आत्मा समझ ब्राह्मणको खिलाते हैं। शाहुकार लोग तो जेवर आद भी पहनाते हैं। अब वह तो जेवर ब्राह्मण को मिल जाता है। उन्हों की आजीविका देखो कैसी होता है। यह सब हैं भक्ति मार्ग। भारत में किने किने मेले लगते हैं। वह हैं मेला होने के मेले। वहां तो ऐसा कोई मेला लगता ही नहीं। वहां सदैव नेचरल खुशी रहती है। यहां है आर्टीफिसीयल खुशी अल्प काल लिए। बाप तुमको लक्स देते हैं। लक्स सोप भी होता हैं ना। तुम भी बाप को याद करने से कितना साफ हो जाते हो। आत्मा की सारी मल निकल जाती है। सभी पाप मिट कर कंचन बन जाते हैं। आत्मा कंचन बनी तो काया भी कंचन मिले। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। ऐसे बाप पर तो बलिहार जाना चाहिए। तुम गाते थे बाबा जब आप आवेंगे तो हम आप पर बलिहार जावेंगे। आप से ही वर्सा लेंगे। मेरा तो एक दूसरा न कोई। और कोई को याद न करो। यह शरीर भी पुराना है। अब हम जाते हैं बाबा के पास। इस शरीर से नष्टोमोहा हुआ तो सब से हुआ। आत्मा समझती हैं अब बाबा आया हुआ है। हमको प्युर होनाहै। इस शरीर को भी भूलना है। छीछी दुनिया से वैराग्य। यह हैं बेहद का वैराग्य। बच्चे जानते हैं हम जावेंगे नई दुनिया में। यह पुरानी दुनिया खत्म हो जावेगा। बाबा साथ लेकर ले जावेंगे। फिर जब आवेंगे तो बाबा साथ थोड़े ही देंगे। फिर आपे ही पार्ट में आना है। यह सभी बातें समझाते फिर भी कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। बाबा सभी के नब्ज़ से फील कर सकते हैं। इनको कितनी खुशी होगी। योग बिगर आत्मा = खुशी में आवेंगे ही नहीं। अभी पुरुषार्थ चलता रहता है। जब विनाश होगा जब तब रेस बन्द होगी। यह पुरुषार्थ सिवाय बाप के कोई सिखला नही सकते हैं। कितना मीठा बाबा है। इन पर तो कुर्बान जाना चाहिए। गरीब बहुत कुर्बान होते हैं। शाहुकार को हृदय विदीर्ण होता है। वह आवेंगे नहीं। कहेंगे हमको तो सभी सुख है। बाप भी समझते हैं यह ड्रामा का प्लेन ही ऐसा बना हुआ है। कोई का दोष नहीं है। मेरा भी ड्रामा में पार्ट है। भक्ति में धक्के खाते2 बैटरी एकदम डिसचार्ज हो गई है। तब ही फिर मैं आता हूं। कल्प पहले मिल मिशल मुझे भी सर्विस करनी ही है। नथींग न्यु। बच्चे समझते हैं अच्छी पढ़ना हमारा फर्ज है जैसे कल्प पहले पढ़े थे राजधानी स्थापन हुई थी वैसे ही अब हो रही है। बाबा को जरा भी फिक्र फिक्र=फिक्र नहीं है। फिक्र तो इनको होना है। क्योंकि यह पुरुषार्थी है। बड़ाकहावना बड़ा दुःख पावना... वह तो हैं ही बड़े ते बड़ा बाबा। इनको कितना माथा मारना पड़ता है। कितने हंगामे होते हैं। समाचार तो सब आते हैं न लिखते ही हैं शिव बाबा केअर आफ ब्रहमा। यह जैसे कि बाबा की पोस्ट ऑफिस है। इनको अच्छा गुडमॉर्निं